आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से मानद उपाधि ग्रहण करते हुए प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह का संबोधन

दिनांक 8 जुलाई, 2005
लंदन

कुलपति महोदय एवं उप कुलपति महोदय,
उपस्थित महानुभावों,
देवियो और सज्जनो

सबसे पहले मैं लंदन में कल हुए आतंकवादी हमलों के खिलाफ अपना आक्रोश और इस घटना पर हार्दिक दुख व्यक्त करता हूं। मैं इन हमलों में मारे गए लोगों के परिवारों व उनके दोस्तों और घायलों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। मैं ब्रिटेन के लोगों, विशेषकर लंदन के नागरिकों के प्रति भारतीयों की सहानुभूति और एकजुटता भी व्यक्त करता हूं।

मेरे यहां आने से पहले भारत में भी एक ऐसे ही आतंकवादी हमले की घटना घट चुकी थी। इससे एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद विश्व समुदाय के लिए खतरा है। आतंकवाद चाहे कहीं भी हो, वह हर जगह शांति, स्वतंत्रता, मानव-सम्मान और सभ्यता के लिए खतरा है। आतंकवादी हमला निर्दोष लोगों के प्रति किया गया कायराना कृत्य है। यह नफरत और द्वेष पर पलता है। जब भी कहीं आतंकवादी हमला होता है तो लोकतंत्र और कानून सम्मत शासन में विश्वास रखने वाले हम सभी को इसके खिलाफ एकजुट हो जाना चाहिए और दृढ़ संकल्प और एकजुटता के साथ इसका मुकाबला करने के लिए अपनी पूर्ण प्रतिबद्धता दर्शानी चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि जहां भी आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जाएगी तो हम सभी खुले और मुक्त समाजों में विश्वास रखने वाले लोग इस लड़ाई के खिलाफ एकजुट हो जाएंगे। मैं लंदन के लोगों के कल्याण की कामना करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनका जन-जीवन शीघ्र ही सामान्य हो और वे फिर से, ब्रिटेन को 2012 के ओलंपिक खेलों का स्थान चुने जाने के संबंध में होने वाले समारोह में भाग लें।

कुलपति महोदय,

मेरे लिए यह एक बड़ा ही भावुक क्षण है। आक्सफोर्ड ने मेरी पुरानी मधुर यादों को फिर से ताजा कर दिया है। इस वजह से और मेरे प्रति प्रदर्शित की गई सम्मान की भावना के लिए मैं वास्तव में अभिभूत हूं। मैं इस सम्मान के लिए कुलपति महोदय आपका और आपके सहयोगियों का तहेदिल से आभारी हूं। यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे कई मानद उपाधियाँ मिली हैं, लेकिन जो सम्मान मुझे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने दिया है, उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। जिस विश्वविद्यालय में मैंने रात-रात भर जागकर एक नियमित डिग्री पाने का प्रयास किया हो, उस विश्वविद्यालय द्वारा मुझे यह सम्मान दिया जाना मेरे लिए एक परम संतोष प्रदान करने वाला अनुभव है। मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। इस दिन को मैं अपने जीवन में सदैव संजोकर रखूंगा।

मेरे छात्र जीवन से लेकर अब तक दुनिया का रूप काफी कुछ बदल चुका है। तथापि, अभी भी कुछ पुरानी समस्याएं बनी हुई हैं। विकासशील देशों को एक नई आवाज और एक नया दर्जा मिला है और पिछले कुछ दशकों से उनमें एक नए विश्वास की भावना उपजी है। एक भारतीय के रूप में मुझे आशा और उद्देश्य की एक नई किरण नज़र आती है। यह नव आशावाद हम भारतीयों को एक आत्म-विश्वास प्रदान करता है और यह हमारी आज की विश्व दृष्टि को आकार प्रदान करता है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आक्सफोर्ड तथा विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों में सैंकड़ों युवा भारतीय विद्यार्थियों और व्यावसायिकों की सफलता ने एक नव उदित भारत के इस नए आत्म-विश्वास को काफी बढ़ा दिया है।

1950 के दशक में हमने जो अर्थशास्त्र सीखा था उसमें युद्धोपरांत और औपनिवेशिक विश्व के बाद की व्यवस्था में आर्थिक संभावनाओं के आशावाद की झलक मिलती है, लेकिन 1960 और 70 के दशक में विकासात्मक अर्थव्यवस्था का ध्यान ज्यादातर विकास की सीमाओं तक ही सीमित रहा। विकासशील देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों के बारे में पर्याप्त संदेह था। मैं यह स्वीकार करता हूं कि जब मैं भारत लौटा तो मुझे अपने बहुत से देशवासियों द्वारा विश्व के प्रति दर्शायी गई गहरी शंका से हैरानी हुई। हम हाल ही में अपने बीते कल की विरासत से प्रभावित थे। न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन के अनुभूत नकारात्मक परिणामों से अपितु इस भावना से भी कि हम शीत युद्ध द्वारा अलग-थलग कर दिए गए थे।

इसमें कोई शक नहीं है कि ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति हमारी शिकायतों का एक मजबूत आधार था। जैसा कि कैंब्रिज इतिहासकार ऐंगस मेडीसन के अथक सांख्यिकीय कार्य ने दर्शाया है, सन् 1700 में विश्व की आय में भारत का हिस्सा 22.6 प्रतिशत था, जो कि उस समय यूरोप के 23.3 प्रतिशत हिस्से के लगभग बराबर था लेकिन 1952 में यह गिरकर केवल 3.8 प्रतिशत रह गया। वास्तव में बीसवीं सदी के आरंभ में ''ब्रिटिश ताज में सबसे ज्यादा चमकदार यह रत्न'' प्रति व्यक्ति आय के मामले में विश्व का सर्वाधिक गरीब देश था। भारत और ब्रिटेन के सम्बंधों के बारे में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रभाव के बावजूद भारत के लोगों के ब्रिटेन के लोगों के साथ सम्बंध आजादी के समय भी सौहार्दपूर्ण थे बल्कि मैं कह सकता हूं कि ये संबंध सौम्य थे।

इसका सबसे शानदार उदाहरण सन् 1931 में यहां आक्सफोर्ड में महात्मा गांधी की रैले क्लब और इंडियन मजलिस के सदस्यों के साथ हुई चर्चा के दौरान मिलता है। 1931 में महात्मा गांधी यहां गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए थे। उस दौरान उन्होंने ए.डी. लिंडसे के घर में दो सप्ताह बिताए। इस बैठक के दौरान महात्मा गांधी से पूछा गया था कि आप "ब्रिटिश साम्राज्य के साथ भारत के संबंधों के किस सीमा तक समाप्त करना चाहेंगे "। उन्होंने बड़ा सटीक उत्तर दिया ''साम्राज्य से पूरी तरह परन्तु ब्रिटेन से बिल्कुल भी नहीं "यदि भारत उन्नति करना चाहता है तथा पिछड़ा नहीं रहना चाहता''। उन्होंने कहा कि ''ब्रिटिश साम्राज्य यदि साम्राज्य है तो केवल भारत की वजह से "। यह साम्राज्यवाद समाप्त होना ही चाहिए। हम ब्रिटेन के बराबर के साझीदार बनना चाहेंगे। हम उनके सुख और दुख में बराबर के भागीदार बनना चाहेंगे। लेकिन यह सब बराबरी की शर्तों पर ही होना चाहिए''। महात्मा गांधी के इस उल्लेखनीय वक्तव्य ने ब्रिटेन के साथ हमारे संबंधों के आधार को परिभाषित किया है।

सन् 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता के पक्ष में भारतीय संविधान सभा से निर्णय लेने का आग्रह करते हुए पं0 जवाहर लाल नेहरू ने भी इसी दृष्टिकोण को दोहराया था। पं0 नेहरू

ने राष्ट्रमंडल की सदस्यता के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हुए ब्रिटेन के साथ स्वतंत्र भारत के संबंधों की दिशा तय करते हुए कहा था किः

''मैं चाहता हूँ कि दुनिया यह देखे कि भारत को अपने आप पर पूरा विश्वास और भरोसा है और यह कि भारत उन देशों के साथ भी मिलकर सहयोग करने को तैयार है जिनके साथ वह विगत में संघर्ष करता रहा है, बशर्ते आज के सहयोग का आधार सम्मानजनक हो और यह कि यह एक मुक्त आधार हो, एक ऐसा आधार जिससे केवल हमारा ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व का भला होगा। कहने का अर्थ यह है कि हम सहयोग से केवल इसलिए इंकार नहीं करेंगे क्योंकि विगत में हम आपस में लड़ते रहे हैं और इस तरह हम अपने पूर्व कर्मों को ढोते रहें''। ये थे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के उद्‌गार।

कुलपति महोदय,

यह महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू की बुद्धिमत्ता और दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि आज भारत और ब्रिटेन के संबंध शेष विश्व के लिए एक उदाहरण हैं। सन् 1991 में जब मैं भारत का वित्त मंत्री बना उस समय हमारी सरकार ने भारत-ब्रिटिश साझीदारी के लिए नई पहलों की शुरूआत की। उस समय तक हमारे संबंध ऐसी अवस्था तक विकसित हो चुके थे जहां हम सच्चे भागीदारों के रूप में एक-दूसरे को सम्मान दे सकें। आज मेरे मन में कोई संदेह नहीं कि भारत और ब्रिटेन सही मायनों में साझीदार हैं और विभिन्न प्रकार के विश्व मुद्दों के प्रति उनके दृष्टिकोण समान हैं।

जहां एक ओर महात्मा गांधी ने साम्राज्य और औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी वहीं दूसरी ओर, वह क्या बात थी जिसके कारण उन्होंने ब्रिटेन और ब्रिटिश लोगों के प्रति इतना सकारात्मक रूख अपनाया? मेरा मानना है कि निःसंदेह वे निष्पक्षता के तत्वों को पहचानते थे जो भारत में ब्रिटेन के तौर-तरीकों की विशेषता थे। जरा इस तथ्य पर विचार करें कि आजादी के लिए भारत के संघर्ष का एक महत्वपूर्ण नारा यह था कि ''सुराज से स्वराज कहीं अधिक मूल्यवान है'' निःसंदेह यह लोकतंत्र का सार है लेकिन यह नारा यह बताता है कि औपनिवेशिक शासन से आजादी पाने के लिए हमारे संघर्ष के चरम सीमा पर होने के बावजूद हमने कभी भी ब्रिटिश सरकार के सुशासन के दावे को पूरी तरह से खारिज नहीं किया। हमने केवल स्वशासन के अपने प्राकृतिक अधिकार का समर्थन किया।

समय बीतने के साथ-साथ और पश्य-दृष्टि की वजह से आज यह संभव हो पाया है कि एक भारतीय प्रधानमंत्री ब्रिटेन के साथ भारत के अनुभवों के बारे में यह कह सके कि इसके परिणाम फायदेमंद भी रहे हैं। कानून सम्मत शासन, संवैधानिक सरकार, स्वतंत्र प्रेस, पेशेवर नागरिक समाज, आधुनिक विश्वविद्यालय तथा अनुसंधान प्रयोगशालाओं की हमारी धारणाएं ये सभी भारत की एक सदियों पुरानी सभ्यता और प्रभुत्वशाली साम्राज्य के मिलन का परिणाम है। इन सभी तत्वों को हम अभी भी महत्व देते हैं। हमारी न्याय प्रणाली, हमारी कानूनी व्यवस्था और ब्यूरोक्रेसी तथा पुलिस व्यवस्था ये सभी महान संस्थाएं हैं और इन्हें ब्रिटिश-इंडियन प्रशासन व्यवस्था से लिया गया है। इन सभी संस्थाओं ने देश की अच्छी सेवा की है।

हमारे संविधान में यथावर्णित भारत की धारणा की जड़ें भारत की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता में गहरे बैठी हुई हैं जिसमें धर्म-निरपेक्षता, लोकतंत्र, कानून सम्मत शासन और सबसे महत्वपूर्ण सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया गया है, चाहे वे किसी भी जाति, समुदाय, भाषा अथवा नस्ल से सम्बंध रखते हों। तथापि, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारे गणतंत्र के संस्थापक भी यूरोप के पुनर्जागरण के युग के साथ जुड़े विचारों से काफी प्रभावित थे। हमारा संविधान अनिवार्यतः भारतीय और हमारी बौद्धिक विरासत में ब्रिटिश तत्वों के बीच स्थायी अन्तर-सम्बंधों का सबूत है।

समग्र तथा बहुलवादी समाज के रूप में भारत की धारणा इन दोनों ही परंपराओं से प्रभावित है। मुझे विश्वास है कि बहु-सांस्कृतिक, बहु-जातीय, बहु-भाषीय तथा बहु-धार्मिक समाज के ढ़ांचे के भीतर लोकतंत्र के निर्माण के हमारे प्रयोग की सफलता सभी समाजों को उस रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित करेगी जिस पर हम चले हैं। इस यात्रा में, जो कि एक रोमांचक यात्रा है, भारत और ब्रिटेन दोनों ने ही एक दूसरे से सीखा है और उनके पास विश्व को सिखाने के लिए भी काफी कुछ है। शायद यह भारत-ब्रिटिश सम्बंधों का सर्वाधिक स्थायी पहलू है।

कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता। इस कहावत को प्रचलन से बाहर करने में कुछ हद तक हम जिम्मेदार हैं। लेकिन अभी भी एक ऐसी दुनिया है जहां सूरज कभी नहीं डूबता और वह है अंग्रेजी बोलने वालों की दुनिया और अंग्रेजी बोलने वाली इस दुनिया में सबसे ज्यादा संख्या है भारतीय मूल के लोगों की।

ब्रिटिश राज की सभी विरासतों में क्रिकेट को छोड़कर सबसे महत्वपूर्ण है— अंग्रेजी भाषा तथा आधुनिक स्कूल प्रणाली। निःसंदेह यहां बैठे लोग शायद हमारी भाषा को न पहचानें लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह अंग्रेजी है। अंग्रेजी का स्वदेशीकरण करते हुए, जैसा कि दुनिया के कई देशों ने किया है, हमने इसे अपनी भाषा बना लिया है। शायद पूर्वसर्गों का हमारा इस्तेमाल सदैव आपकी अंग्रेजी जैसा न हो; शायद हम कभी-कभी क्रियार्थक संज्ञा को तोड़ देते हों; और शायद हम उपपद के प्रयोग में भूल-चूक करते हों, फिर भी मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ और हर व्यक्ति इस बात से सहमत होगा कि अंग्रेजी भारतीय रचनात्मकता से समृद्ध हुई है और हमने आपको आर.के. नारायण और सलमान रुश्दी जैसे प्रख्यात अंग्रेजी लेखक दिए हैं। आज अंग्रेजी को भारत में एक अन्य भारतीय भाषा के रूप में देखा जाता है।

कुलपति महोदय,

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रिटेन के बारे में सबसे ज्यादा काव्यमय और उदार अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। गुरूदेव विश्व प्रसिद्ध तथा नोबेल पुरस्कार विजेता महाकाव्य ''गीतांजलि'' की शुरूआती पंक्तियों में कहते हैं:

''पश्चिम ने अपने द्वार खोल दिए हैं,
वहां अपरिमित खजाने हैं,
भारत की असीम मानव शक्ति,
अपने खुले तटों से ये खजाने,
लेगी भी और खजाने देगी भी।''

जिस समय गुरूदेव ने भारत ब्रिटिश संबंधों को ''लेने और देने'' के संबंध के रूप में देखा उस समय इस तरह का कार्य साहस और राजनीतिमत्ता का कार्य था। तथापि यह एक महान कल्पना दृष्टि का कार्य भी था। जब हम अपने अतीत पर नजर डालते हैं तथा साथ ही भविष्य की ओर दृष्टि करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत-ब्रिटिश संबंध ''लेने और देने'' का ही संबंध है। आज हमारे सामने यह देखने की चुनौती है कि हम निरंतर एक दूसरे पर निर्भर तथा वैश्विकृत इस दुनिया में इस परस्पर लाभकारी संबंध को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं।

मैं एक बार फिर अपने भूतपूर्व विश्वविद्यालय की बात करके अपना संबोधन समाप्त करना चाहूँगा। ऑक्सफोर्ड 19वीं सदी से ही संस्कृत शिक्षण तथा भारतीय संस्कृति के अध्ययन का केन्द्र रहा है। कुलपति महोदय ने उसके कई उदाहरण याद दिलाए हैं। संस्कृत में बोडेन प्रोफेसरशिप तथा पूर्वी धर्मों और आचारों में स्पालडिंग प्रोफेसरशिप भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति इस विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का सबूत है। मुझे यह याद करते हुए बड़ा गर्व होता है कि स्पालडिंग प्रोफेसरशिप दो अतिविशिष्ट भारतीयों: डॉ. एस राधाकृष्णन जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने और डॉ. बिमल कृष्ण मतिलाल के पास थी।

भारतीय संस्कृति के अध्ययन और परिरक्षण के संदर्भ में, मैं एक अन्य महान ऑक्सफोर्ड शिक्षित लार्ड कर्जन के योगदान को भी याद करना चाहता हूँ जिनकी भारतीय स्मारकों के परिरक्षण और जीर्णोद्धार की परियोजना के बारे में स्वयं पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था ''चाहे किसी वायसराय को याद रखा जाए या न रखा जाए लेकिन लार्ड कर्जन को याद रखा जाएगा क्योंकि उन्होंने भारत के सौंदर्य का जीर्णोद्धार किया''।

जिन ब्रिटिश लोगों ने भारत पर शासन किया उनमें से बहुतों ने अपने जीवन की शुरूआत ऑक्सफोर्ड से ही की। उनमें से कुछ भारत के मित्र बनकर यहीं रह गए। एडवर्ड थामसन, वैरियर इल्विन तथा बहुत से अन्य लोग हमारे जीवन और समाज में खुशहाली लाने हेतु दिए गए अपने योगदान के लिए भारत में याद किए जाते हैं।

मैं हमेशा एक छात्र के रूप में ही बनते और बिगड़ते सपनों के इस शहर में आता रहा हूँ। कुलपति महोदय इस बार मैं एक महान राष्ट्र और वहां के महान लोगों के एक विनम्र प्रतिनिधि के रूप में यहां आया हूँ। महोदय मुझे आज आपने जो सम्मान दिया है उसके लिए मैं आपका और इस प्राचीन विश्वविद्यालय का आभारी हूँ।

धन्यवाद।

******